AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

सारनाथ का अशोक स्तंभ: एक सिंहावलोकन

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. संध्या कुमारी
सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग
डी.के. कॉलेज, डुमराँव
वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय
आरा, बिहार, भारत

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र 'सारनाथ का अशोक स्तंभ : एक सिंहावलोकन' को समर्पित है। आदिकाल प्राचीन बिहार में प्रस्तर धातु तथा मिट्टी की कलाकृतियाँ पायी गयी है। पाषाणकालीन पुरास्थल चिरांद में पॉलिसदार पत्थर की कुल्हाड़ी जैसी कई कलाकृतियों के साक्ष्य पाए गए हैं। मौर्य–कला, शुंग कला, गुप्त कला तथा पाल कला के साक्ष्य बिहार के विभिन्न स्थलों पर मिलते हैं। चित्रकला के क्षेत्र में बिहार पटना कली, मंजूषा शैली तथा मधुबनी पेंटिंग जैसी कई अन्य शैलियों की भूमि रही है। इस लेख में उपर्युक्त सभी कलाओं का वर्णन नहीं कर विशेष रूप से मौर्यकला के अद्वितीय उदाहरण अशोक स्तंभ को प्रतिबिम्बित करने का प्रयास किया गया है। मौर्य कला प्राचीन काल से आधुनिक काल तक विद्वानों, इतिहासकारों, विदेशी यात्रियों तथा कलाविदों के आकर्षण का केन्द्र रही है। भारत भ्रमण करने आए चीनी यात्रियों में फाह्यान, ह्वेनसांग तथा इत्सिंग ने अशोक स्तम्भ की कलाकृतियों की प्रशंसा की है। आधुनिक काल में सर जॉन मार्शल, पर्सी ब्राउन, स्टेला, वासुदेव शरण अग्रवाल, आनन्द कुमारस्वामी (श्रीलंका) एवं हटिंगटन ने अपनी रचनाओं में मौर्य कला पर विशिष्ट प्रकाश डाला है।

मुख्य शब्द

कलाकृति, स्तंभ, स्थापत्य, बौद्ध साहित्य, एकाश्मक पाषाण, संस्कृति, धर्मचक्र शिलालेख.

प्रस्तावना

प्रस्तुत लेख में अशोक स्तम्भों के अध्ययन के माध्यम से कुछ अनछूये सवालों के उत्तर ढूंढ़ने का प्रयास किया गया है जिनमें इन स्तंभों का महत्व, उनपर विदेशी प्रभाव तथा तकनीक और प्रौद्योगिकी का विकास शामिल है साथ ही इसमे ऐसे कई सवालों की चर्चा के साथ ही उनपर उत्केरित पशुओं के भौतिक संस्कृति में महत्व, अशोक महान की पर्यावरणीय संवेदनशीलता तथा इनके कल्याणकारी उद्देश्यों की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है। मौर्य काल के अन्तर्गत अशोक स्तम्भ एकाश्म पत्थर पर उत्क्रेरित स्थापत्य और मूर्तिकला के सुन्दर समन्वय का बेजोड़ उदाहरण हैं। ए.एल. बाशम ने इन स्तम्भों को स्थापत्य में नहीं रखकर मूर्तिकला के रूप में अधिक चित्रित किया गया है।[1] इनका मानना है कि इन स्तम्भों का प्रयोग भवनों में न होकर स्वतंत्र रूप से किया गया है। केवल एक स्तंभ पटना के कुम्हरार से प्राप्त हुआ है जिसका प्रयोग मौर्य भवनों के लिए किया गया है।

मौर्य साम्राज्य के विशाल भू–भाग में विभिन्न स्थलों से स्तंभ मिले हैं। अशोक स्तम्भ की कलाकृतियाँ उसकी

मौलिकता और कल्पनाशीलता के सजीव उदाहरण हैं। ये स्तम्भ मौर्य साम्राज्य को प्रतिबिम्बित करता है जो ऐतिहासिक विकास को प्रमाणित करता है। इसमें एक विस्तृत साम्राज्य की सीमा, सम्पूर्ण समाज को एकसूत्र में बाँधने के साथ विविध संस्कृतियों के सम्मिश्रण को दर्शाया गया है। हटिंगटन सुसान एल. ने अपनी कृति में इन स्तंभों की संख्या बौद्ध साहित्यों के आधार पर लगभग 40 मानी है।[2] जो पश्चिमोत्तर में अफगानिस्तान से उत्तर में नेपाल पूर्व में बंगाल तथा दक्षिण मे कर्नाटक एवं पश्चिम में लौरिया–अरेराज, रामपुरवा (पूर्वी चम्पारण) तथा बसाढ़ (वैशाली) में पाए गए हैं, परन्तु इनका सर्वोत्कृष्ट उदाहरण 'सारनाथ' का स्तम्भ (उ.प्र.) है। जहाँ तक इन स्तम्भों के निर्माण का सवाल है। इस संदर्भ में ए.एल. बाशम के अनुसार इनका निर्माण पाटलिपुत्र में किया जाता था जिसके लिए कच्चे माल की आपूर्ति चुनार से की जाती थी क्योंकि पाटलिपुत्र में ऐसे एकाश्मक पाषाणों की उपलब्धता नहीं थी, चूँकि इन सभी स्तंभ का निर्माण मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र में किया जाता था। अतः इन स्तंभों पर केन्द्रीय प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।[3]

अशोक स्तंभ पर उत्केरित कलाकृतियों तथा स्तभ निर्माण पर यह आक्षेप लगाया जाता है कि यह विदेशी प्रभाव धारण किए हुए है। इस संदर्भ में सर जान मार्शल, पर्सी ब्राउन स्टेला, क्रेमिस जैसे विद्वान इसे ईरान से प्रभावित मानते हैं जबकि शिल्प व वास्तुविषय की दृष्टि से इन दोनों स्तंभों में कई अन्तर हैं जैसे–अशोक स्तंभ एकाश्म अर्थात् एक ही पत्थर को तराशकर बनाए गए हैं। इसके विपरीत ईरानी स्तंभों को कई मंडलाकार टुकडों को जोड़कर बनाया गया है। अशोक के स्तंभ बिना चौकी या आधार के भूमि पर टिकाए गए है जबकि ईरानी स्तंभ चौकी पर खड़े हैं। ईरानी स्तन विशाल भवनों में लगाए गए थे, इसके विपरीत अशोक के स्तंभ स्वतंत्र रूप से विकसित हुए हैं। अशोक स्तंभ के शीर्ष पर पशुओं की आकृतियाँ है जबकि ईरानी स्तंभों पर मानव आकृतियाँ है। अशोक स्तंभ सपाट है किन्तु ईरानी स्तंभ गड़ारीदार है। अशोक के स्तभों के शीर्ष पर लगी पशु मूर्तियों का एक विशेष प्रतीकात्मक अर्थ है जिसकी समुचित व्याख्या भारतीय परम्परा में ही संभव है जैसा कि वासुदेव शरण अग्रवाल ने अपनी पुस्तक 'भारतीय कला' में वर्णन किया है। इसी प्रकार ईरानी स्तंभों के शीर्ष में कोई प्रतीकात्मकता नहीं है। पुनः अशोक के स्तंभ नीचे से ऊपर की ओर क्रमशः पतले होते गए हैं। दूसरे शब्दों में इन स्तभों के नीचे की परिधि ज्यादा है जो ऊपर की और कम होती जाती है जबकि ईरानी स्तभों की चौड़ाई नीचे से ऊपर की ओर समान हैं। ए.एल. बाशम ने इन अशोक स्तभों पर पड़े विदेशी प्रभाव की समन्वयकारी व्याख्या की है जिसके अनुसार प्रस्तर कलाकारों ने बहुत कुछ फारस तथा कुछ यूनान से सीखा था परन्तु उन्होंने अपनी रचनाओं को प्रमुख रूप से भारतीयता प्रदान की है।[4] मौर्य स्तंभ पर चमकीली पॉलिश को लेकर भी विद्वानों के विभिन्न मत है। स्पूनर का विचार है कि यह ईरान से लिया गया है, परन्तु इस तर्क को कई विद्वानों ने स्वीकार नहीं किया है। इस सन्दर्भ में वासुदेव शरण अग्रवाल ने अपनी रचना 'भारतीय कला' में इससे असहमति जताई है। उन्होंने आपस्तम्बसूत्र तथा महाभारत से यह प्रमाण निकाला है कि मृदभाण्डों को चमकीला बनाने के लिए 'लक्षीकरणे' की कला विकसित थी जो ओपदार पॉलिस की प्राचीनता का सूचक है। प्रस्तर को चमकीला करने की प्राचीन परम्परा वहाँ चली आ रही थी। मौर्य स्तंभों के पूर्व भी प्रस्तर व मृदभांडों पर चमकीले पॉलिस के प्रमाण मिले हैं जैसे–चिरांद से प्राप्त पॉलिस वाले प्रस्तर हथियनर, पिपरहवा बौद्ध स्तूप की धातुगर्भ मंजूषा, पटना की यक्ष प्रतिमा तथा ईसा पूर्व छठी शताब्दी की उत्तर काली पॉलिस मृद्मांड उल्लेखनीय है। अतः स्पष्ट है कि अशोक स्तंभ पर की गई चमकीली पॉलिस पूर्व से चली आ रही परम्परा की ही चरमोत्कर्ष रूप है।[5]

सांस्कृतिक विविधता की दर्शाने में भी इन स्तंभों का सर्वश्रेष्ठ स्थान हैं। इन स्तभों पर विविध पशुओं का चित्रण किया गया है जिसका उदाहरण सारनाथ के स्तंभों में सम्मिलित रूप से देखा जा सकता है। इस पर सिंह के अंकन जिनकी संख्या चार है के साथ–साथ बैल, हाथी तथा अश्व को भी उत्केरित किया गया है। कई विद्वानों ने इन पशुओं की मूर्तियो को अलग–अलग ढ़ंग से व्याख्यायित किया है। कुछ विद्वानों ने इसे प्रतीक मात्र कहा है जबकि वासुदेवशरण अग्रवाल ने इसे सीमित दायरे में न देखने की बात की है। मार्क ब्लाख ने इन पशुओं की तुलना हिन्दू देवताओं से की है। उनके अनुसार सिंह दुर्गा का हाथी इंद्र का. बैल शिव का तथा अश्व सूर्य का प्रतीक है। उल्लेखनीय है कि इन प्रतीकों की हिन्दू देवी–देवताओं से तुलना करने में अनेक कठिनाइयाँ है। पशुओं की पूजा

की परम्परा भारतीय समाज में सिंधु सभ्यता से ही हैं, उदाहरणस्वरूप. सिंधु सभ्यता के मुहरों पर पाए गए एक शृंगी बैल, पशुपति की मूर्ति आदि, परन्तु सिंधु सभ्यता की जानकारी अशोक को कितनी थी इसके बारे में कहना कठिन है। वैदिक धर्म में देवताओं की पूजा चरा विधि से की जाती थी जिनके मंत्रों का वर्णन वेदों में मिलता हैं। इसी प्रकार ईसा पूर्व छठी शताब्दी तक यज्ञों में पशुओं के वध का प्रचलन हो चुका था जिससे स्पष्ट होता है कि वैदिक देवी देवताओं और इन पशुओं के बीच प्रतीक का संबंध न था बल्कि देवताओं को प्रसन्न करने के लिए इन पशुओं की बलि चढ़ाई जाती थी। यहाँ उल्लेखनीय है कि वैदिक देवी–देवताओं की पशुओं की सवारी के रूप में पूजा का प्रचलन मौर्यकाल के बाद आता है जबकि मौर्य काल में लोग प्रकृति पूजा, पशु पूजा तथा अन्य प्रतीकों की पूजा करते थे।[6]

कुछ विद्वानों ने अशोक स्तंभ पर उत्केरित जानवरों की तुलना बुद्ध के जीवन में घटित चार प्रमुख घटनाओं से की है। फूशे महोदय इस विचार के प्रबल समर्थक हैं। इन्होंने हाथी को बुद्ध के माता के गर्भ में आने का, वृष को बुद्ध के जन्म का, अश्व को बुद्ध के गृहत्याग का तथा सिंह को बुद्ध का प्रतीक माना है। इस तर्क को भी मानने में अनेक कठिनाइयाँ है जैसे–यदि सिंह बुद्ध का प्रतीक है तो चौथी घटना महानिर्वाण का प्रतीक क्या है? दूसरी कठिनाई यह है कि अन्य जानवरों के साथ घटनाओं का संबंध महावंश में चतुस्पद के रूप में किया गया है जो अशोक स्तंभ के निर्माण के बाद की रचना है। चूँकि बौद्ध साहित्य में अशोक की चर्चा बौद्ध धर्म के उत्साही संरक्षक के रूप में की गई है इसलिए उसके प्रत्येक कार्य को बौद्ध धर्म के आइने से देखने की कोशिश की जाती रही है। इसी क्रम में अशोक स्तंभों पर अंकित विविध पशुओं को बुद्ध व उनके जीवन में जोड़ने की कोशिश की गई है जैसा कि रोमिला थापर ने भी बौद्ध साहित्य के वर्णन को अशोक के धर्मनिरपेक्ष शासक की छवि को भ्रमित करने वाला बताया है।[7]

सारनाथ के अतिरिक्त अन्य स्तम्भों पर भी सिंह की सर्वाधिक मूर्तियाँ पाई गई है जो केन्द्रीय कला का प्रभाव है। यह मौर्य साम्राज्य की शक्ति का प्रतीक भी है। मौर्य स्तम्भों पर उत्केरित पशुओं का महत्व तत्कालीन जीवन में भी था। मौर्य साम्राज्य की विशाल सीमा थी जिसके अन्तर्गत विविध संस्कृति के लोग रहते थे जिनके बीच क्षेत्रीय विविधता तथा उनको भौतिक जीवन में भी भिन्नता व्याप्त थी। अशोक ने अपने साम्राज्य को एकता के सूत्र में बांधने के अनोखे उपाय किए। इसी परिप्रेक्ष्य में वह अपने राज्य में रहने वाले विविध संस्कृति के लोगों के जीवन में महत्व रखने वाले पशुओं को अपने स्तभों पर उत्केरित करवाया जैसे हाथी जो आटविक राज्यों के लोगों के निवासियों के आर्थिक और सामाजिक जीवन में महत्व रखता था।[8] भारतीय संस्कृति में हाथी के महत्व की प्राचीन काल से परम्परा रही है।[9] कौटिल्य ने तो हाथियों की उपलब्धता के आधार पर वनों का विभाजन अपनी पुस्तक 'अर्थशास्त्र' में किया है जिसका प्रमुख कारण मौर्य सेना में हाथियों का सर्वोपरि योगदान था। मेगास्थनीज द्वारा भी हस्ति सेन की प्रमुखता का वर्णन इण्डिका में किया गया है।[10] जहाँ तक बैलों का महत्व है तो मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि आधारित थी। राजस्व का प्रमुख हिस्सा कृषि कर से प्राप्त होता था। अशोक के काल में किसी प्रकार की भू–राजस्व में कटौती नहीं की गई। केवल रुम्मिनदेई अभिलेख से 1/6 से 1/8 भाग कर की छूट के प्रमाण मिलते हैं। बौद्ध होने के बावजूद राजकीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अशोक ने मामूली छूट दी थी। यह सम्राट के राजनीतिक दृष्टिकोण की मजबूती को दिखाता है। इस प्रकार इन स्तम्भों (सारनाथ) पर उत्केरित बैलों को आकृति भारतीय कृषक समाज में उसके महत्व को दर्शाना तथा उसकी सुरक्षा करना था। कृषि कार्य पर बल देने का प्रमाण कंधार शिलालेखों से भी मिलता है।[11] सारनाथ स्तंभ में गतिमान अश्व की मूर्ति कई दृष्टिकोण से मौर्य युग के लिए महत्वपूर्ण थी। इसका धार्मिक तथा सैनिक महत्व था। अश्व तत्कालीन समाज तथा राजशक्ति दोनों के लिए महत्वपूर्ण था। मेगास्थनीज तथा कौटिल्य दोनों को हाथी के बाद अश्व सेना को ही प्रमुख बताया है। वैदिक यज्ञों में यह अश्वमेघ राजशक्ति का प्रतीक विद्वान भी माना जाता था। गतिशील मूर्ति राज्य की प्रगतिशीलता को प्रदर्शित करती है। वह अशोक जैसे दूरदर्शी राजा की सोच का परिचायक है।

मौर्य स्तंभों ने सर्वाधिक उत्केरित पशु सिंह है। बिहार में केवल रामपुरवा स्तंभ को छोड़कर अन्य सभी स्तंभों पर सिंह की आकृति बनी हुई है। सारनाथ में चार सिंह को चारों दिशाओं की ओर मुख किये हुए दिखाया गया है। सिंह के साथ धर्मचक्र का अंकन तथा 'सत्यमेव जयते' द्वारा निरंकुश राजतन्त्र पर कल्याणकारी भावनाओं को

प्रमुखता की दिखाया गया है जैसा कि हेमचन्द्र राय चौधरी ने कलिंग युद्ध के बाद आए सम्प्रभुता में परिवर्तन को बताया है। वास्तव में सिह किसी महापुरूष का संकेत नहीं करता है, बल्कि साम्राज्यवादी शक्ति के ऊपर धर्म की नैतिकता का आरोपण है, अन्य जानवरों के साथ उनका समवयवादी संबंध है।[12]

मानव इतिहास के विकास के क्रम को देखे तो मध्य पाषाण युग के बाद तथा औद्योगिक क्रांति के पूर्व मनुष्य के जीवन को गति देने का मुख्य आधार पशु ही था। पशु श्रम के द्वारा उत्पादन उत्पादन प्रणाली संचालित थी तथा पशुओं की संख्या राज्य की शक्ति का निर्धारित करती थी। इनका बहुउपयोगी महत्व था। अशोक के स्तंभ इन पशुओं के तत्कालीन जीवन में महत्व को दर्शाते हैं न कि वैदिक धर्म या बौद्ध धर्म के किसी देवी–देवताओं की ओर इंगित करते हैं।[13]

पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखने के उद्देश्य से बनाए गए इन स्तभों का विशिष्ट महत्व है। अशोक ने प्रकृति में उपस्थित अन्य जीवों के प्रति मनुष्य का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है। इन जीवों के प्रति लोगों के दृष्टिकोण को बदलने का भी अशोक ने प्रयास किया। पशु–पक्षियों पर आधारित उत्पादों में बदलाव किए। बिहार यात्रा, समाज, प्रवहण जैसे मनोरंजन के साधनों के स्वरूप में परिवर्तन किया गया। एक प्रकार के समाज थे जिनमें लोग सुरापान, मांस भक्षण तथा मल्लयुद्ध को देखकर मनोरंजन करते थे।[14]

अशोक को यह समाज पसंद नहीं था। अतः उसने नए समाजों का प्रारंभ किया जिनमें हस्ति, अग्निस्तंम तथा विमानों की झांकियों दिखाई जाती थी। बिहार यात्राओं में मृगया और सुरापान की प्रधानता रहती थी। अशोक ने इन यात्राओं को बंद करवा दिया और धम्म यात्रों की शुरुआत की। प्रवहण भी एक प्रकार के सामूहिक समारोह थे जिनमें भोज्य (मांस) और पेय पदार्थों का प्रचुरता से उपयोग किया जाता था। इन स्तंभों पर चित्रित पशुओं में जंगली तथा पालतू दोनों ही प्रकार के पशु हैं। सारनाथ स्तंभ इन पशु पक्षियों की महत्ता को दर्शाता है। अशोक कंधार शिलालेख में जीव हिंसा त्यागने की चेतावनी देता है।[15]

मौर्य साम्राज्य में इनका शिकार बहेलिया समुदाय द्वारा किया जाता था तथा दूसरी और वैदिक यज्ञों में भी इनकी बलि दी जाती थी। अशोक द्वारा जीव हत्या पर रोक लगाया गया। ये जीव न केवल जैविक संसाधन थे बल्कि पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में भी अहम थे। मौर्य साम्राज्य में पशुओं के संरक्षण के उद्देश्य से वनों का वर्गीकरण किया गया था। कौटिल्य ने जिस हस्तिवन की चर्चा की है उसमें मुख्य पशु हाथी को सुरक्षित रखना था। उस वन को संरक्षित वन या बायो रिजर्व घोषित किया ताकि आम जनता की गतिविधियाँ या हस्तक्षेप न हो सके। हाथी के अतिरिक्त पशु भी उसमे निवास करते थे। अतः इस संरक्षित वनों को राज्य की सम्पत्ति घोषित किया गया जिससे इन जंगलों के साथ–साथ पशुओं को भी सुरक्षा प्रदान की जा सकें। अशोक सड़कों के किनारे वृक्ष लगाकर पर्यावरण संतुलन के प्रति अपनी दूरदृष्टि का परिचय दिया। ब्रिटिश भारत में बॉम्बे गजट के आधार पर यह कहा है कि 19वीं शताब्दी के आरंभ में तथा मराठों को हराने के बाद ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने रत्नगिरि के उस सागौन वनों को एकदम नष्ट कर दिया जो मराठा नौसेना प्रमुख कान्होजी आंगड़े द्वारा लगाए गए थे। अपने साम्राज्य में प्रजा को न केवल राजाज्ञा देने के लिए स्तंभ बनवाए बल्कि जैव संरक्षण के प्रति जागरूकता की भी फैलाया जिनके प्रतीकात्मक रूप अशोक स्तंभ पर उत्केरित पशु पक्षी है। हम सिन्धु सभ्यता के पतन को देख चुके है। पर्यावरणीय असंतुलन के कारण भी इसका पतन हुआ। अशोक न केवल अपने साम्राज्य को बांधने का काम (धम्म) किया बल्कि प्रकृति के संरक्षण पर भी ध्यान दिया। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि मौर्य साम्राज्य का पतन कुछ वर्षों के बाद हुआ, परन्तु सिन्धु सभ्यता की तरह मौर्य संस्कृति या सभ्यता का पतन नहीं हुआ। रामशरण शर्मा के अनुसार मौर्य संस्कृति का विस्तार सुदूर क्षेत्र में हुआ, जिसके पीछे अशोक जैसे साम्राज्यवादी शासक की प्रकृति के जीवों के प्रति भी कल्याणकारी सोच समाहित था। यदि यह विस्तृत साम्राज्यवाद हिंसक नीतियों पर आधारित होता तो शायद ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया बाधित हो जाती और हम मौर्य सभ्यता के पतन के कारण तथा उनकी निरन्तरता को ढूंढ़ते रहते।

विज्ञान और तकनीक के दृष्टिकोण से अशोक स्तभ अद्वितीय है जिसका नमूना विश्व इतिहास में दुर्लभ है।

प्रस्तर कला के निर्माण की नवीन शैली को ए.एल बाशम ने भी स्वीकार किया है। प्राचीन काल में आए यूनानी राजदूत मेगास्थनीज ने भी भारतीय प्रस्तर कला को उत्कृष्ट कोटि का माना हैं. पत्थर पर सीसे की तरह पॉलिश करने की कला इसे आज भी चमकदार बनाए रखी है। इन विशाल स्तंभ को बनाने, उसे सुदूर ले जाने की तकनीक चमत्कारिक है इन स्तंभों का वजन 40 से 50 टन के बीच अनुमान लगाया गया है। इसका निर्माण केन्द्रीय स्थल पाटलिपुत्र में किया जाता था। यहीं से इसे साम्राज्य के विभिन्न कोने तक पहुँचाया गया। यह स्तंभ मौर्य तकनीक के विकसित होने की स्वयं प्रमाण देते हैं।[16]

निष्कर्ष

इस प्रकार स्पष्ट है कि अशोक स्तंभ की कलाकृतियाँ तथा उस पर उत्केरित अभिलेखों को नए दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता है। यह सम्राट अशोक के चिंतन को प्रतिबिम्बित करता है जिसमे वर्तमान साम्राज्य के भौतिक जीवन की झलक दिखाई देती है और जो प्राचीन साम्राज्यवाद के कल्याणकारी स्वरूप का जीवंत उदाहरण है तथा जिसमें न केवल मनुष्य बल्कि अन्य जीवों को भी पृथ्वी पर जीने का अधिकार देता है। यह स्तंभ पर्यावरणीय संतुलन, जैव विविधता, तकनीक, कला के प्रदर्शन का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करता है जिसका केन्द्र पाटलिपुत्र था। बिहार की समृद्ध संस्कृति का परिचायक अशोक स्तंभ को धरोहर के रूप में रखने की आवश्यकता है। इन पर अभी और गहन शोध अध्ययन की जरूरत है।

संदर्भ सूची

1. बॉशम ए.एल. (1954) *दि वन्दर दैट वाज इण्डिया,* सिंडग्विक जैक्सन लि., यूनाइटेड किंगडम, पृ. 252–253।
2. हटिंगटन, सुसान एल (1993) *दि आर्ट ऑव ऐंशिएंट इण्डिया,* वेदर हिल, न्यूयार्क, पृ. 41–53।
3. अग्रवाल, बी.एस. (1965) *भारतीय कला,* पृथिवी प्रकाशन, वाराणसी, पृ. 133।
4. बॉशम, ए.एल., वही, पृ. 253।
5. अग्रवाल, बी.एल., वही, पृ. 133।
6. मुखर्जी, आर.के. (1928) *कल्चर एंड आर्ट ऑफ इण्डिया,* मैकमिलन एंड कंपनी, न्यूयार्क, पृ. 41।
7. थापर, रोमिला (1961) *अशोक और मौर्यों का पतन,* क्लेरेंडन प्रेस, ऑक्सफोर्ड, पृ. 17–18।
8. प्रवीण सुल्ताना (2010) *एलिफैंट इन इण्डियन पेटिंग,* कला प्रकाशन, वाराणसी।
9. झा एवं श्रीमाली (1997) *प्राचीन भारत का इतिहास,* हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, पृ. 389।
10. प्रकाश, ओम (1997) *प्राचीन भारत का इतिहास,* वाणी एजुकेशन बुक्स, नई दिल्ली, पृ. 151–154।
11. बरूआ, बी.एम. (1955) *अशोक एंड हिज इंसक्रीप्शंस,* न्यू ऐज पब्लिशर्स, कलकत्ता।
12. चौधरी, हेमचन्द्र राय (1923) *प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास,* कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता, पृ. 286।
13. शर्मा, रामचरण (1983) *मैटेरियल कल्चर एंड सोशल फॉर्मेशंस इन ऐशियंट इण्डिया,* मैकमिलन इण्डिया, नई दिल्ली।
14. झा एवं श्रीमाली (1997) *प्राचीन भारत का इतिहास,* हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, पृ. 199।
15. रेऊ, पंडित विश्वेश्वरनाथ (2000) *भारत के प्राचीन राजवंश,* भगवतीलाल राजपुरोहित प्रकाशन, जयुपर पब्लिकेशन स्कीम, पृ. 65–73।
16. चट्टोपाध्याय, बी.डी. (1986) *हिस्ट्री ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी इन एशिएंट इण्डिया,* फिरमाकल्म प्राइवेट लिं, कलकत्ता।

——==00==——